ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 10, Issue 5, September 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 6.551

+91 9940572462 +91 9940572462 ijarasem@gmail.com www.ijarasem.com

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 5, September 2023 |

भारतीय भाषाओं में कहानी का स्वरूप और वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उसकी प्रासंगिकता

Dr. Sohan Raj Parmar

Professor in Dept. of Hindi, Govt. PG College, Barmer, Rajasthan, India

शोध सार

हिन्दी गद्य विधाओं में 'कहानी' सबसे सशक्त विधा बनकर विकसित हुई है। आज कहानी के पाठक अन्य सभी विधाओं की तुलना में सर्वाधिक हैं। यही कारण है कि पत्रपत्रिकाओं में कहानियों की मांग सर्वाधिक है। यही नहीं-, अपितु कई पत्रिकाएँ तो केवल कहानी पत्रिकाएँ ही हैं, जो समकालीन कथाकारों की स्तरीय कहानियों के साथरों की कहानियाँ भी छापती हैं। साथ उभरते हुए कहानीका- विगत सौ वर्षों में हिन्दी कहानी ने जो आशातीत प्रगति की है, वह उत्साहवर्द्धक है। अन्य सभी गद्य विधाओं की अपेक्षा आज की कहानी में युगबोध की क्षमता सबसे अधिक दिखाई पड़ती है।

उपन्यास और कहानी दोनों में ही कथा तत्त्व विद्यमान होता है, अतः प्रारंभ में लोगों की यह धारणा थी कि उपन्यास और कहानी में केवल आकार का ही भेद है, किन्तु अब धारणा निर्मूल हो चुकी है। ज्योंज्यों कहानी की शिल्प विधि का विका-स होता गयाउपन्यास से उसका . एक अंग या संवेदना की अभिव्यक्ति होती है पार्थक्य भी अलग झलकने लगा। वास्तव में कहानी में जीवन के किसी, जबकि उपन्यास में जीवन को समग्रता का अंकन किया जाता है। स्पष्ट है कि कहानी की मूल आत्मा एक संवेदना या एक प्रभाव है। कहानी का प्रमुख उद्देश्य भी कम से कम शब्दों में उस प्रभाव को अभिव्यक्त करना मात्र है। हिन्दी के प्रमुख कवि एवं कथाकार अज्ञेय के अनुसार "कहानी एक सूक्ष्मदर्शी यंत्र है, जिसके नीचे मानवीय अस्तित्व के दृश्य खुलते हैं।"

मूल शब्द -:समकालीन, गद्य, संवेदना, साहित्य, आविर्भाव, कलात्मक।

परिचयात्मक

कहानी उतनी ही पुरानी है, जितनी मानव जाति। मनोरंजन और शिक्षा दोनों के लिए उसका उपयोग आदिकाल से ही होता रहा है। 'ऋग्वेद' की कथाएँ, पौराणिक गाथाएँ, उपनिषदों के सूत्र, महाभारत और रामायण आदि इसके प्रमाण हैं। आधुनिक कहानी का जन्म उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशकों में हुआ। जिनमें भारतीय लेखक इस काल में परिचित थे। वे जासूसी, अपराध कथाएँ या सस्ते रोमांस थे, अतः आरंभ में सभी भारतीय भाषाओं में ऐसी ही कहानियाँ लिखी गई, जिनका प्रधान उद्देश्य सस्ता मनोरजन और नीति की शिक्षा देना था।[1,2]

भारतीय भाषाओं में कहानी का स्वरूप -:सन् 1935-36 ईथम अधिवेशन के में प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना हुई। इसके प्र . सभापति'मुंशी प्रेमचंद' थे। मार्क्सवादी विचारों का प्रभाव धीरेधीरे पूरे भारत में फैलने लगा। अब व्यक्ति को बदलने के स्थान पर समाज - को बदलने पर बल दिया जाने लगा। सुधार के स्थान पर विद्रोह और अहिंसा के स्थान पर क्रांति का मार्ग अपनाए जाने की वकालत की जाने लगी। सामाजिक अन्याय आर्थिक शोषण, पूँजीवाद की बुराइयाँ, वर्ग संघर्ष और वर्ग चेतना कहानियों के विषय बने।

साहित्यकारों से आह्वान किया गया कि वे अपना सामाजिक दायित्व समझें, पददलितों, शोषितों तथा अत्याचार पीड़ितों का पक्ष लें, शोषकों, उत्पीड़कों, जमीन्दार, उद्योगपति तथा निहित स्वार्थवालों का पर्दाफाश करें। उसके विरुद्ध जनशक्ति को संगठित करने में सहायता दें। रूसी साम्यवादी साहित्य से प्रेरणा लें। इस प्रकार भारतीय भाषाओं के कहानी लेखकों ने जनक्रांति की कहानियाँ लिखीं। बंगला में मणिक बनर्जी, ताराशंकर, स्वर्ण कमल भट्टाचार्य तथा नानि भौमिक ने साम्यवादी विचारों से प्रभावित कहानियाँ लिखीं। गुजराती के 'मैधानी' ने पुलिस और अमीरों द्वारा किसानों और सब्जी उगाने वालों पर किए जाने वाले अन्याय एवं शोषण का करुणा चित्र खींचा। सुंदरम जितुभाई मेहता तथा बकुलेश ने वर्ग संघर्ष का आवाहन किया और सताये हुए व्यक्तियों द्वारा शोषको की हत्या का समर्थन किया। हिन्दी में प्रेमचंद, यशपाल, राहुल सांकृत्यायन और नागार्जुन की कहानियों में शोषितों के प्रति सहानुभूति और शोषकों के प्रति आक्रोश व्यक्त किया गया है।[3,4,5]

कन्नड़ में एने उत्पीड़िता और शोषितों की करुण कहानी कह .सु.रा.ष्णराव से प्रेरणा पाकर नीरजन बसवराज कट्टीमणि और ताकृ .एन.

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 5, September 2023 |

शोषण की वीभत्स तस्वीर पेश की। उड़िया में गोदावरीश महापात्र, भगवती चरण पाणिग्रही और कालीचरण पाणिग्रही ने न केवल अमीरों द्वारा गरीबों के शोषण के चित्र प्रस्तुत किए, अपितु शोषितों को विद्रोह करते दिखाया। पंजाबी के नवतेज सिंह की कहानियों में मार्क्सवादी चिंतन मुखर है। उर्दू के हयात उल्ला अंसारी, राजेन्द्र सिंह बेदी, कृष्ण चंदर और मंटो की कहानियाँ भी मार्क्सवाद से प्रभावित रचनाएँ हैं।

आजादी के बाद साहित्य मंच पर नए लेखक आए और उनके साथ आई 'नई कहानी', 'विषय और शिल्प' दोनों दृष्टिकोण से नवीन गुजराती में जयतों दलाल और शिवकुमार जोशी, हिन्दी में अमरकांत, उड़िया में गोपीनाथ मोहंती तथा सुरेन्द्र मोहंती, तेलुगू में श्री विरची के अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषाओं के कहानी लेखकों ने भी जीवन के सभी क्षेत्रों में फैलते भ्रष्टाचार, कुशासन और सामाजिक कुरीतियों आदि पर कहानियाँ लिखकर एक ओर हमारा ध्यान आकृष्ट कराया, तो दूसरी और हमारी नई चेतना जगाई। गुजराती के जयंतीदलाल की कहानी 'जीवन जाग्यूँ' के नायक का कथन देखिए "सुखी होने का एक ही उपाय है और वह है 'मौत' यहाँ सबसे बड़ा सुख है", कहानीकार पात्रों के अंतर्गत उनके दिमाग, हृदय और आंतरिक संघर्षों का विश्लेषण करता है।

भारत के लगभग सभी भाषाओं में इस प्रकार की कहानियाँ लिखी गयीं। जैसेबंगला में मोतीनंदी और सुनील गंगोपाध्याय -, गुजराती में जयंती दलाल एवं जयंत खत्री, हिन्दी में निर्मल वर्मा, कन्नड़ में नव्योदय लेखक, उड़िया में रबीपटनायक और शांतनु कुमार आचार्य आदि इसी प्रकार की कहानियाँ लिखने वाले प्रमुख कहानीकार हुए हैं।

अरबीसफारसी का कथा साहित्य पहले से ही प्रचलित था। अतः भारतीय कहानी का आरंभ रोमां-, प्रेमकथाओं, जासूसी तथा रम्याद्भुत कहानियों से होता हैजैसे असमिया के लक्ष्मीनाथ बेजरूआ ., गुजराती में रमण भाई नीलकंठ, हिन्दी में किशोरी लाल गोस्वामी और गहमरी। उसके बाद बंगला कहानियों ने अन्य भारतीय भाषाओं के कहानीकारों को प्रभावित किया। टैगोर तथा शरतचन्द्र के कथा साहित्य के हिन्दी अनुवाद हुए और उन्होंने सभी लेखकों को प्रभावित किया। गुजराती में नारायण हेमचंद, तमिल में बीअय्यर .एस.बी. पुटप्पा इसके उदाहरण .बी .और कन्नड़ में केहुए हैं। स्वतंत्रता आंदोलनों तथा समाज सुधार के कार्य में जुटी संस्थाएँ, ब्रह्मसमाज, आर्यसमाज एवं प्रार्थना समाज आदि से प्रेरणा पाकर सभी भारतीय भाषाओं के कहानी लेखकों ने राष्ट्र प्रेम, देश को संस्कृति और इतिहास के प्रति गौरव भाव जगाने वाली तथा समाज की कुरीतियों को हटाकर स्वस्थ समाज बनाने का संदेश देने वाली आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कहानियां लिखीं। हिन्दी में प्रेमचंद, बंगला में शरतबाबू, तेलुगू में गुडीपाटि वेंकटचलम, मराठी में ना .एस.फडके एवं वी .सी. सुखतकर और उड़िया में कालिदीचरण पाणिग्रही ने इसी धारा की कहानियाँ लिखीं।[6]

असमिया के अपूर्व शर्मा और नीरद चौधरी, बंगला के मणिशंकर मुखोपाध्याय और प्रफुल्ल रे, गुजराती के प्रफुल्ल देव और प्रबोध पारिख, हिन्दी के राजेन्द्र यादव और दिलीप चित्रे तथा तेलुगू के रामाराव और सी राव .एस.'नई कहानी' के उल्लेखनीय हस्ताक्षर हैं।
भारतीय कहानी के विकास में महिला कहानी लेखिकाओं का भी योगदान महत्त्वपूर्ण रहा है। आरंभिक महिला कहानी लेखिकाओं ने पुरुष प्रधान समाज द्वारा किए गए अत्याचारों पर कहानियाँ लिखी, जैसे गुजराती में सुमतिगुनी, उर्मिला, विजय लक्ष्मी त्रिवेदी और शारदा बेन मेहता, हिन्दी में उषा मित्र और सुभद्रा कुमारी चौहान तथा तेलुगू में कणुप्रति वरलक्षम्मा।

सन् 1960 के बाद कहानी लेखकों को एक नई पीढ़ी का आविर्भाव हुआ। अतः 'नई कहानी' में फ्रॉयड के मनोवैज्ञानिक सिद्धांत . अस्तित्वाद की अवधारणाएँ और आधुनिक राजनीतिक मतवादों का प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। कारण कुछ भी हो, सभी भारतीय भाषाओं के लेखकों ने अपनी कहानियों में लैंगिक सम्बन्धों और विकृत्तियों पर बहुत लिखा है। स्वयं को साहसी और सभी निषेध का अतिक्रमण करने वाला सिद्ध करने के लिए ये लेखक साहित्यिक और कलात्मक भाषा में अमर्यादित और अश्लील चित्र ले आये हैं, जो चिंतनीय है।
भारत के सभी भाषाओं में कहानी को लेकर नए आंदोलन हुए हैं। कहानी को नए नामों से पुकारा गया है जैसेनई कहानी-, सचेतना कहानी, समानान्तर कहानी अकहानी, विद्रोह कहानी भूखी पीढ़ी की कहानी आक्रोश कहानी, नई लहर की कहानी आदि। तत्पश्चात् सामाजिक चिंतन और सामाजिक कर्तव्य समझते हुए भारतीय भाषाओं के कथाकारों ने सभी भाषाओं में वर्तमान सामाजिक स्वरूप और स्थितियों का पर्दाफाश करने का उत्तम काम किए हैं।

कहानी की उत्पति एवं विकास -:हिन्दी कहानी की विकास यात्रा का आरंभ 1900 ईपास ही मानन-के आस .ा समीचीन है, क्योंकि इससे पूर्व हिन्दी में कहानी जैसी किसी विधा का सूत्रपात नहीं हुआ था। हिन्दी की प्रथम कहानी कौनसी है-? यह विवादास्पद प्रश्न है। इस सम्बन्ध में जिन कहानियों का नाम लिया जाता है, वे हैं -'रानी केतकी की कहानी' (मुशी ईशा अल्ला खां(, 'राजा भोज का सपना' (शिव प्रसाद सितारे हिन्द(, 'इन्दुमती' (किशोरी लाल गोस्वामी ('दुलाईवाली' (बंग महिला ('एक टोकरी भर मिट्टी' (माधव राव सप्रे . ..('ग्यारह वर्ष का समय आचार्य रामचन्द्र शुक्ल)

इसमें प्रथम दो कहानी 'रानी केतकी की कहानी' ईशा अल्ला खां तथा 'राजा भोज का सपना' शिव प्रसाद सितारे हिन्द में कहानी कला के तत्त्व विद्यमान नहीं हैं। अतः उन्हें हिन्दी कहानी की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'इन्दुमती' को हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी माना। जिसका प्रकाशन सन् 1900 ई में .'सरस्वती पत्रिका' में हुआ था, किन्तु शिवदान सिंह चौहान के अनुसार यह कहानी शेक्सपीयर के टेम्पेस्ट का अनुवाद है अतः मौलिक रचना नहीं कही जा सकती। .'सरस्वती पत्रिका' में ही सन् 1903 ईमें . रामचन्द्र शुक्ल की कहानी'ग्यारह वर्ष का समय' प्रकाशित हुई तथा सन् 1907 ईमें बंगमहिला की .'दुलाईवाली' कहानी छपी। इधर नवीन अनुसंधानों के आधार पर यह सिद्ध हुआ है कि सन् 1901 ई में .'एक टोकरी भर मिट्टी' कहानी का प्रकाशन 'छत्तीसगढ़ मित्र' नामक पत्रिका में हुआ था, जिसके लेखक माधव राव सप्रे थे। अतः यही हिन्दी की सर्वप्रथम मौलिक कहानी कही जा सकती है। हिन्दी कहानी के विकास का अध्ययन करने के लिए हम कथासम्राट प्रेमचन्द को यदि केन्द्र बिन्दु मान लें, तो उसे चार भागों में विभक्त कर सकते हैं-

1. प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी कहानी)1900 ई .1915 ई(.
2. प्रेमचन्द युगीन हिन्दी कहानी)1916-1936)
3. प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी कहानी, एवं)1936-1950)
4. नई कहानी)1950 ई(के बाद .

1. **प्रेमचंद पूर्व हिन्दी कहानी)1900-1915) :-**इस काल में हिन्दी कहानी अपना स्वरूप ग्रहण कर रही थी। शिल्प विधि का विकास हो रहा था, जिसमें माधव प्रमिश्र ., लाला भगवान दौन, वृन्दावन लाल वर्मा, विश्वम्भरनाथ शर्मा, ज्वालादत्त शर्मा इत्यादि सम्मलित हैं। इधर सन् 1909 में 'इन्दू' पत्रिका में जयशंकर प्रसाद, राजा राधिका रमण प्र सिंह, इलाचन्द जोशी एवं गंगा प्रसाद श्रीवास्तव की कहानियाँ भी छपने लगीं। इन कहानियों के विषय प्रेम, समाजसुधार नीति उपदेश से जुड़ा हु-आ है। इस काल के सर्वश्रेष्ठ कहानीकार चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की प्रसिद्ध कहानी 'उसने कहा था' कहानी को हिन्दी कहानी के विकास का प्रथम सोपान कहा जाता है।[7,8,9]

2. **प्रेमचंद युगीन हिन्दी कहानी)1915-36) :-**इस काल में प्रेमचंद की यथार्थवादी कहानी ग्रामीण जीवन के समस्या को उठाया, जैसे - सानों के शोषण की समस्याजमींदारों द्वारा कि, छुआछूत, रूढ़ि अंधविश्वास, संयुक्त परिवार की समस्या, भ्रष्टाचार, व्यक्तिगत जीवन की समस्या आदि सम्मलित है। प्रेमचंद के समकालीन कहानीकारों में 'कौशिक', सुदर्शन, जयशंकर प्रसाद, चतुरसेन शास्त्री, रायकृष्णदास, पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' गुलेरी, भगवती प्रसाद वाजपेयी, जैनेन्द्र अज्ञेय जोशी, यशपाल आदि उल्लेखनीय हैं।

3. **प्रेमचंदोत्तर हिन्दी कहानी)1936-50) :-**इस काल में एक और तो प्रगतिवादी विचारधारा से अनुप्रानित कहानीकारों ने प्रगतिवादी कहानी लिखी तो दूसरी ओर मनोविश्लेषण परक कहानीकारों ने ऐसे विषय पर कहानियाँ लिखी, जिसमें व्यक्तिमन को आंतरिक परतों को खोलकर देखा गया था। प्रगतिवादी कहानीकारों में यशपाल, रांगेय राघव, नागार्जुन, अमृत राय, मन्मथनाथ गुप्ता इत्यादि कथाकार हैं। मनोविश्लेषणवादी कहानीकारों में अज्ञेय, इलाचन्द्र जोशी एवं जैनेन्द्र का नाम उल्लेखनीय हैं।

4. **नई कहानी)1950 के बाद (:-** 1950 के बाद की कहानी विषय और शिल्प दोनों ही दृष्टिकोण से पूर्ववर्ती कहानी से भिन्न है। डॉ . नामवर सिंह के अनुसार "अभी तक जो कहानी सिर्फ कथा कहती थी या कोई चरित्र पेश करती थी अथवा एक विचार को झटका देती थीं, वह जीवन के प्रति नया भाव बोध जगाती है।" नई कहानी में विषयों में विविधता के साथ साथ-शिल्प का नयापन भी विद्यमान है।
इस प्रकार नये कहानीकारों में मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव, धर्मवीर भारती, निर्मल वर्मा, कमलेश्वर, अमरकांत, शेखर जोशी, रेणु मार्कण्डेय, मन्नू भंडारी, राजकमल चौधरी, गंगा प्रसाद विमल आदि उल्लेखनीय हैं। साठ के बाद जिन कथाकारों ने अनुभवों के आधार पर आधुनिक जीवन को यथार्थ को समर्थ अभिव्यक्ति दी है, उनमें उल्लेखनीय हैंदूधनाथ सिंह -, महीप सिंह, गिरिराज किशोर, विमल, रवीन्द्र कालिया, काशीनाथ सिंह, रामधारी सिंह दिवाकर और महिला लेखिकाओं में ममता कालिया, सुधा अरोड़ा निरूपमा, सेवती आदि ने आधुनिकता बोध की कहानियाँ लिखी हैं। आचार्य शुक्ल कहते हैं कि "कहानियों का विकास तो हमारे यहाँ और भी विशद और विस्तृत रूप में हुआ और उनमें वर्तमान कवियों का पूरा योग रहा है।"[10]

निष्कर्ष

भारतीय भाषाओं में कहानी का स्वरूप और वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उसकी प्रासंगिकता विषय आलेख के निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि कहानी व्यक्तिगत अनुभूति की अभिव्यक्ति है। अतः अभिव्यक्ति में विविधता होते हुए भी यदि उनमें समानता देखते हैं तो उसका कारण हैदेश की अखण्ड संस्कृति और भावात्मक एकता -, विभिन्न प्रदेशों में समान समस्याएँ और उनके प्रति समान प्रतिक्रिया। जब भी निकट भविष्य में भारतीय संस्कृति का इतिहास लिखा जाएगा, तो पता लगेगा कि देश के विभिन्न भागों में रहने वाले भारतीयों की आशा -

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 5, September 2023 |

आकांक्षा, दुःखविषाद का जितना सच्चा और प्रामाणिक चित्र कहानियों में मिलता है-था हर्षदर्द त-, उतना अन्यत्र नहीं।[11]

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ, डॉशिव कुमार शर्मा ., पृ .595
2. भारतीय साहित्य का समेकित इतिहास, डॉ.नगेन्द्र . पृ .622
3. वही, 225
4. कहानी 'नई कहानी', डॉनामवर सिंह .,पृ .337
5. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृ .371
6. नया साहित्य नये प्रश्न- नंददुलारे वाजपेयी, विद्यामंदिर प्रकाशन, वाराणसी 1955 ई.. पृ. 188
7. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास- रामस्वरूप चतुर्वेदी, राधाकृष्ण प्रकाशन, वाराणसी 1986 ई. पू. 232
8. भारतीय संस्कृति में लोक जीवन की अभिव्यक्ति, महामहोपाध्याय गोपीनाथ कविराज, एम.ए. सम्मेलन पत्रिका, लोक संस्कृति अंक पृष्ठ- 24, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 1973
9. प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास श्री कृष्ण ओझा, पृ .302
10.मैनेजर पाण्डेय, साहित्य और इतिहास दृष्टि, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005, पृ.119
11.अभिषेक रौशन, बालकृष्ण भट्ट और आधुनिक हिन्दी आलोचना का आरम्भ, अंतिका प्रकाशन, गाजियाबाद, 2009, पृ.13

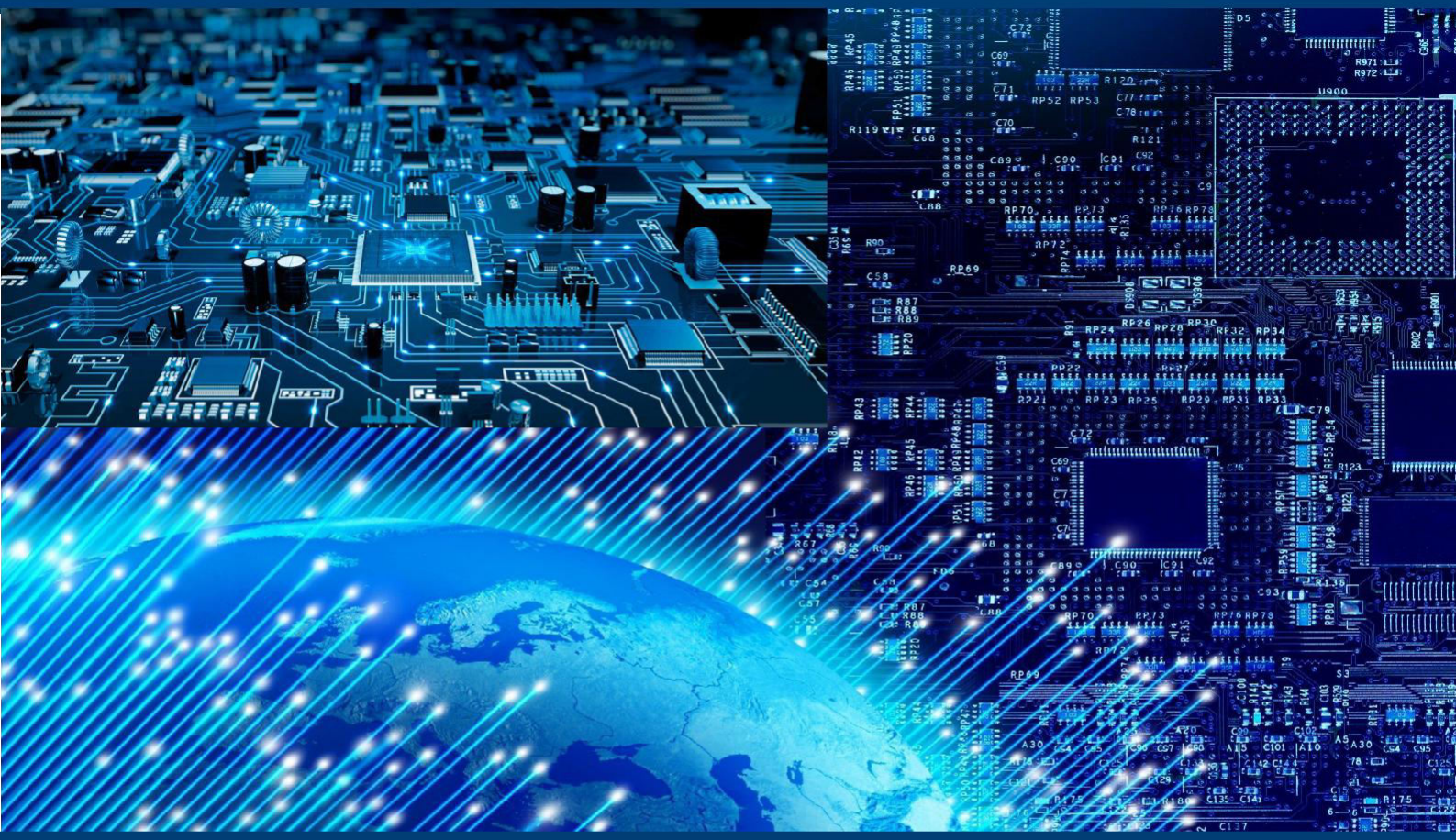

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |